बर्तन चढ़ाया पर खीर उफनते रूकी ही नहीं । खुशबू से बुढ़िया की बहू का मन खीर खाने को हुआ। उसने दरवाजे के पीछे बैठकर एक कटोरा खीर भगवान गणेश के भोग लगाकर खा लिया । इतने में बुढ़िया आई और उसने आवाज दी गणेश्या तेरी खीर पीले । झट गणेश जी आये और डोकरी से बोले मां तेरी बहु ने मेरे भोग लगा दिया सो मैं तो जीम लिया, अब तू नगरी जिमा दे । बुढ़िया सबको नूतने गई, सब हँसने लगे बोले कल तक तो खाने को नहीं था आज जिमाने आई है । फिर भी सब आये ठाठ से जीम कर गये । फिर भी खीर का उतार नहीं आया । हे गणेश जी महाराज जैसे खीर का उतार नहीं आया और खीर का भगोना भरा रहा वैसे हमारे घर के भी सदा भंडार भरे रखना। जय गजानन्द जी ।

शीतला सप्तमी की कहानी

एक गाँव में सास, बहू रहती थी। शीतला सप्तमी का दिन आया तब सासू ने बहू को भोजन बनाने के लिए कहा । बहू देर रात्रि तक भोजन बनाती रही । इतने में उसका बच्चा रोने लगा तब वह भोजन का कार्य छोड़कर बच्चे को दूध पिलाने के लिए लेट गई । दिन भर की थकान से उसको नींद आ गई और चूल्हा जलता ही रहा।

आधी रात के समय शीतला माता भ्रमण करती बहू के घर आ गई और चूल्हे में लौटने लगी, जिससे शीतला माता का पूरा शरीर जल गया। तो शीतला माता ने श्राप दिया कि जैसे मेरा शरीर जला है वैसे ही तेरा पेट जले ।

बहू उठी तो देखा की चूल्हा जल रहा था और उसके बच्चे का पूरा शरीर जला हुआ निर्जीव था।

यह देख बहू जोर–जोर से रोने लगी । वह समझ गई कि शीतला माता के कोप से ही यह हुआ है। इतने में सासू भी आ गई, उसको भी यह देखकर काफी दुःख हुआ, उसने बहू को धीरज बंधाते हुए कहा कि बेटी! शीतला माता के पास जा वह सब वापस अच्छा कर देगी। सासू जी का आशीर्वाद लेकर मृत बच्चे को एक टोकरी में रखकर बहू निकल पड़ी।